॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 18 अंक : 11 10 जून 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

गुरुकुल कांगड़ी में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी ने सारे विश्व को शैक्षणिक क्रांति का संदेश दिया - आकर्षण और विशेषताएं

गुरुकुल एक ऐसा परीक्षण था, जिस की कृतकार्यता और सफलता पर शुरू से ही सन्देह प्रगट किया जाता था। श्रीयुत रेम्जे मैकडानल्ड की पीछे दी हुई सम्मति बिल्कुल ठीक है कि मैकाले के 1835 के उस सुप्रसिद्ध लेख के बाद, जिस द्वारा भारत में वर्तमान नैतिकता-शून्य सरकारी शिक्षा का सूत्रपात हुआ था, केवल गुरुकुल ही एक परीक्षण है जो उसके प्रतिकूल किया गया है। धारा के ठीक विपरीत तैरने वाले की सफलता पर किसको विश्वास हो सकता है? गुरुकुल की भी ऐसी ही स्थिति थी। जंगल में माता-पिता से अलग सोलह वर्ष तक बालकों के रहने की कल्पना तक लोगों के लिये विश्वास से बाहर की बात थी। पर, महात्मा मुंशीराम जी की श्रद्धा, विश्वास और तत्परता ने गुरुकुल की सफलता के रूप में असंभव को भी संभव बना कर दिखा दिया। उसकी जिस लोकप्रियता का पीछे उल्लेख किया जा चुका है वह उसकी सफलता का परिचय देने के लिये पर्याप्त है। इस प्रसंग में उसकी सफलता की एक और साक्षी द जायेगी और वह है गुरुकुल का आकर्षण। इस आकर्षण से आर्य जनता तो गुरुकुल की ओर ऐसी खिंचती चली गई कि गुरुकुल उसके लिये ऐसा तीर्थ बन गया, प्रतिवर्ष उत्सव के समय जिसके दर्शन करना आर्य जनता अपना कर्त्तव्य समझती है। आर्य जनता के अलावा कट्टर सनातनी, ईसाई, मुसलमान, यूरोनियन-न केवल अंग्रेज किन्तु अमेरिकन, फ्रेंच, जर्मन आदि भी-गुरुकुल की ओर आकर्षित होते गये हैं। समाज-सुधार, मातृभाषा हिन्दी के पुनरुद्धार और मौलिक शिक्षा के विस्तार आदि की दृष्टि से गुरुकुल निस्सन्देह आदर्श संस्था है, इसलिये ऐसे लोगों का उसकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है; किन्तु ऐसे लोग भी गुरुकुल की ओर आकर्षित हुए, जिनका गुरुकुल के साथ कोई संबन्ध नहीं था।

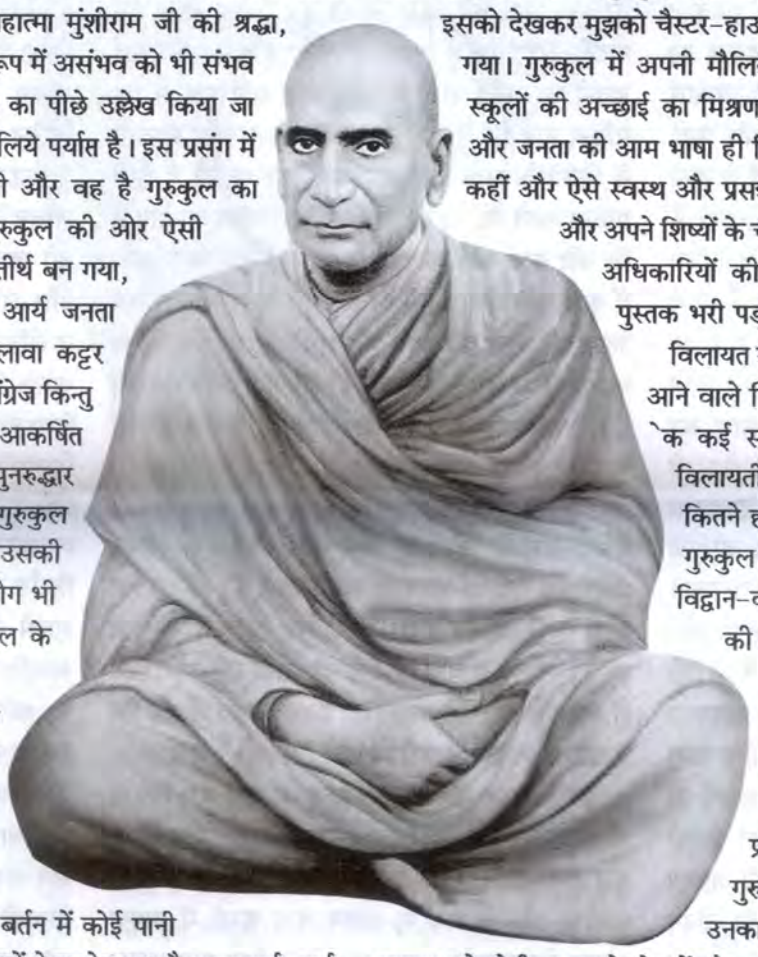

अलीगढ़-मुस्लिम-यूनिवर्सिटी का कमीशन गुरुकुल आया और उस पर मुग्ध हो गया। डाक्टर अंसारी और बैरिस्टर आसफअली सरीखे निष्पक्ष मुसलमान गुरुकुल गये और उस पर लट्टू हो गये। जो मुसलमान गुरुकुल को साम्प्रदायिक संस्था समझते हुए यह सोचते थे कि उनको वहां अपने बर्तन में कोई पानी तक नहीं पिलायेगा, जब ब्रह्मचारियों और अध्यापकों ने उनके साथ बैठ कर भाई-भाई की तरह भोजन किया तब उनकी आंखें खुलीं और गुरुकुल ने उनके हृदयों में घर कर लिया। कलकत्ता-यूनिवर्सिटी कमीशन के प्रधान मि. सैडलर और श्री आशुतोष मुकर्जी गुरुकुल आये; उन पर गुरुकुल का जो असर हुआ, वह सैडलर कमीशन की रिपोर्ट में दर्ज है। मि. सैडलर ने गुरुकुल का खूब गहरा अवलोकन करने के बाद कहा था- "मातृभाषा द्वारा उच्च शिक्षा देने के परीक्षण में गुरुकुल को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।" माननीय श्रीनिवास शास्त्री सरीखे नरम से नरम, लाला लाजपतराय जी सरीखे गरम से गरम, पंडित मोतीलाल जी नेहरू सरीखे उग्रतम राजनीतिज्ञ, पंडित मदनमोहन जी मालवीय सरीखे फूंक-फूंक कर आगे गदम बढ़ाने वाले और गुरुकुल से भी बड़ी संस्था के संस्थापक, सेठ जमनालाल बजाज सरीखे श्रद्धासम्पन्न साधु-स्वभाव महानुभाव, भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू सरीखी महिला, शांतिनिकेतन (बोलपुर) के संस्थापक विश्वविख्यात श्री रवीन्द्रनाथ टौगोर सरीखे महापुरुषऔर जगद्बन्द्य महात्मा गांधी सरीखे सन्त आदि सब को ही, भिन्न-भिन्न रुचि और भिन्न-भिन्न स्वभाव रखते हुए भी, गुरुकुल ने अपन ओर आकर्षित किया और सबके हृदयों में अपने लिये एक-सा स्थान बनाया। जिले के मजिस्ट्रेट, प्रान्त के गवर्नर और भारत के वायसराय के लिये भी गुरुकुल में कुछ आकर्षण था। रूड़की के ज्वाइगट मजिस्ट्रेट मि. आर.सी. हार्वर्ट ने ठीक ही लिखा था- "गुरुकुल एक अद्भुत संस्था है, जिसका प्रबन्ध अत्युत्तम है। इसको देखकर मुझको चैस्टर-हाउस का अपना विद्यार्थी-जीवन सहसा याद आ गया। गुरुकुल में अपनी मौलिक पद्धति के साथ विलायत के सार्वजनिक स्कूलों की अच्छाई का मिश्रण किया गया है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी है और जनता की आम भाषा ही शिक्षा का वास्तविक माध्यम है। मैंने भारत में कहीं और ऐसे स्वस्थ और प्रसन्न बालक नहीं देखें। अध्यापक निःस्वार्थी हैं और अपने शिष्यों के चरित्र-गठन का पूरा ध्यान रखते हैं।" सरकारी अधिकारियों की ऐसी सम्मतियों से गुरुकुल की सम्मति-पुस्तक भरी पड़ी है।

विलायत से भारत के सुप्रसिद्ध स्थानों की यात्रा के लिये आने वाले विदेशी याबी गुरुकुल अवश्य आते थे। यूरोप के कई समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि मि. नेविन्सन ने विलायती पत्रों में गुरुकुल की इतनी प्रशंसा की थी कि कितने ही विदेशी यात्री उनके लेख पढ़ने के बाद ही गुरुकुल आये थे। अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा-विज्ञ विद्वान-वकील मि. मायरन् एच. फेल्प्स ने गुरुकुल की प्रशंसा में इलाहाबाद के 'पायोनियर' में बहुत से विस्तृत पत्र लिखे थे। वे इतने प्रभावशाली पत्र थे कि 'पायोनियर' का वही सम्पादक लेखमाला के अन्त में गुरुकुल की प्रशंसा करने के लिये बाध्य हुआ, जो पहिले उनको प्रकाशित तक करने में संकोच करता था। फैल्प्स गुरुकुल के साथ इतने तन्मय हो गये थे कि उनका नाम गुरुकुल में पं. दयानारायण रख लिया गया था। वे धोती-कुरता के वेष में पूरे काश्मीरी पंडित ही जान पड़ते थे। वे प्राय: कहा करते थे कि यदि मेरा कोई लड़का होता तो मैं उसको गुरुकुल में भरती करता अथवा मैं ही यदि आठ वर्ष की आयु प्राप्त कर सकता तो गुरुकुल में भरती हो जाता। विलायत के 'डेलीमेल' के प्रतिनिधि मैक्सवैल, इंग्लैंड की सार्वजनिक-सदाचार-समिति के प्रमुख सदस्य एवं सदाचार की समस्या के अध्ययन के लिये ही समस्त संसार की यात्रा पर निकले हुए जी.एन. फौक्सपिट, इंग्लैंड की लिवरल क्लब के सदस्य तथा सुप्रसिद्ध लेखक विलियम आर्थर, भारत भक्त दीनबन्धु मि. एगड्रूज और उनके साथी मि. पियरसन, मि. ऐच. हालैंड, इस समय के इंग्लैंड के प्रधानमंत्री मि. रैम्जे मैकडानल्ड, लार्ड इसलिंगटन, सर थियोडोर मारिसन, मि. स्काट, मि. एफ.टी. ब्रुक, जर्मनी के मि. वे, हालैंड के मि. कैरीयर, जापान के प्रोफेसर किमूरा इत्यादि कितने ही विदेशी यात्री

गुरुकुल आये और उसकी प्रशंसा के गीत गाते हुए वापिस लौटे। मि. हालैंड ने 'मॉर्डन रिव्यू' में गुरुकुल को न केवल भारत किन्तु समस्त संसार की आशा का केन्द्र लिखा था। मि. मैकडानल्ड की सम्मति पीछे दी जा चुकी है। गुरुकुल में दिये व्याख्यान में भी आपने कहा था– ''गुरुकुल का उद्देश्य भारतीयों को सरकारी यूनिवर्सिटी की तरह दोगले अंग्रेज न बना कर पूर्ण भारतवासी बनाना है।'' लार्ड इसलिंगटन भारत में सन् 1913 में आये हुए रायल कमीशन के सभापति थे। आपने अपने भाषण में गुरुकुल को बहुत मनोरंजक संस्था कहा था और कहा था कि पश्चिमीय सभ्यता नगरों से उत्पन्न हुई है और पूर्वीय सभ्यता जंगलों से। आप यहां जंगलों में बैठे हुए मृतप्राय पूर्वीय सभ्यता में फिर से प्राण-प्रतिष्ठा कर रहे हैं। जापान के प्रसिद्ध विद्वान और वहां के विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री किमूरा गुरुकुल से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। उन्होंने कहा था– ''थोड़े से समय के निावस में ही मैंने यहां से अनेक शिक्षायें प्राप्त की हैं, जो मेरे देश के लिये भी बिल्कुल नवीन हैं। आशा है, भविष्य में जापान के बहुत से विद्यार्थी यहां आकर भारत की प्राचीन संस्कृति का अध्ययन किया करेंगे।''

इस प्रकार गुरुकुल पश्चिमीय लोगों को भी अपनी सफलता और विशेषताओं पर मुग्ध करने में कृतकार्य हुआ। वहां का वातावरण ही कुछ ऐसा था कि बाहिर के लोग उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। गुरुकल ने एक फैल्प्स को ही पंडित दयानारायण नहीं बनाया, किन्तु कितनों के ही जीवन और विचारों में गुरुकुल ने क्रांति पैदा की थी। मि. एगड्रूज का मांसाहार छुड़ा कर उनको शाकाहारी बनाने का गौरव गुरुकुल को ही प्राप्त है। महात्मा जी के साथ मि. एगड्रूज का इतना अपनापन था कि दोनों का आपस का पत्र-व्यवहार 'माई डियर राम' तथा 'यूअर डियर चार्ली' और 'माई डियर चार्ली' तथा 'यूअर डियर राम' के शब्दों में होता था। वह इतना उपयोगी और विस्तृत पत्र-व्यवहार है कि यदि अब भी जितना प्राप्त है उतना ही प्रकाशित किया जा सके तो एक शिक्षाप्रद पुस्तक का काम दे सकता है। उस पत्र-व्यवहार से यह प्रकट होता है कि भारत को ईसाई बनाने के सुख-स्वप्न देखने वाले पादरियों के गिरोह में से एगड्रूज को निकाल कर उनको भारत भक्त और दीनबन्धु बनाने का श्रेय भी गुरुकुल एवं महात्मा जी को ही है। श्रीयुत एगडरूज संसार के किसी भी कोने में रहे, महात्मा जी को बराबर पत्र लिखते रहे। प्रिटोरिया (दक्षिण अफ्रीका) से एक पत्र में दीनबन्धु ने महात्मा जी को लिखा था– ''मुझको इलहाम हुआ है कि भारत पहिले से भी अधिक गहरे अर्थों में मेरी मातृभूमि है और भारतमाता के प्रति अपने प्रेम के द्वारा ही मैं अपनी स्वर्गीया माता जी आत्मा को सन्तुष्ट कर सकूंगा। मैं पिता जी से मिलने के लिये इंग्लैंड जा रहा हूं और वहां अपनी माता की कब्र पर फूल चढ़ाऊंगा। परन्तु उसकी आतमा तो वहां न होगी। वह तो भारत में है, जो भारत लौटने पर बड़े प्रेम के साथ मेरा स्वागत करेगी।'' शिमला से महात्मा जी को लिखे हुये एक पत्र में लिखा है:– ''यहाँ आने पर मुझको मालूम हुआ कि जबसे मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की है, तब से बिशप और दूसरे लोग मुझसे बहुत असंतुष्ट हैं। उनका कहना है कि मैंने ईसाइयत को त्याग दिया है। मैंने उनको कह दिया है कि मैं पहिले की अपेक्षा अधिक सच्चा ईसाई बन गया हूं। यही मैं बनना चाहता था। इंग्लैंड से भी इस सम्बन्ध में बहुत पत्र आये हैं। उनमें मेरे पिता जी का पत्र सबसे अधिक दु:खपूर्ण है। यह जान कर कि मैं पादरी नहीं रहा, उनका तो हृदय टूट गया है। वे बहुत वृद्ध हैं। इन बातों को वे नहीं समझ सकते। मैंने उनको बहुत दु:ख पहुंचाया है। मैं स्वयं इसके लिये दु:खी हूँ। परन्तु मैं जानता था कि यह सब तो होगा ही और उसको सहन भी करना होगा। मुझको आपके अन्यतम प्रेम का पूरा भरोसा है।'' डरबिन से भी इसी आशय का लिखा हुआ एक पत्र है। गुरुकुल के सम्बन्ध में आप सदा ही चिंतित रहते थे। इंग्लैंड से आपने एकपत्र में लिखा था– ''श्रीयुत गोखले से मिलकर मुझको बड़ी चिंता हुई। उनको भय है कि गुरुकुल पर पुलिस की नजर है और वहां तलाशी आदि होने की संभावना है। सर वेलेराटाइन शिरोल ने भी इस ओर संकेत किया है। मैंने उससे कुछ विस्तार में जानना चाहा। पर, वह चुप साध गया। परमात्मा से मेरी यह प्रार्थना है कि आप पर कोई आपत्ति न आये और पुलिस आप के जीवन तथा कार्य को संकटमय न बना सके।'' गुरुकुल के प्रति आपका प्रेम इतना अधिक था कि आप अपने साथी मि. पियर्सन के साथ महीनों गुरुकुल आ कर रहते थे। गुरुकुल को आप दोनों ने अपना घर बना लिया था। मि. एराडग्रुज के सौ से अधिक पत्रों में से ऊपर केवल तीन पत्रों की कुछ पंक्तियों दी गई हैं। इनसे स्पष्ट है कि दीनबन्धु एराडरूज महात्मा जी को अपना पथप्रदर्शक मानते थे।

कलकत्ता के बिशप-कॉलेज के पादरी अध्यापक मि. आर.जी. मिलबर्न मि. पियर्सन की प्रेरणा से हिन्दी सीखने की इच्छा से सन् 1914 के फरवरी मास में गुरुकुल पधारे थे। आने से पहले आप ने महात्मा जी से गुरुकुल आने की आज्ञा मांगते हुए लिखा था– ''मैं पादरी-अध्यापक हूँ। शायद आप गुरुकुल में एक ईसाई पादरी का रहना पसंद न करें। यदि आप मुझ से यह प्रतिज्ञा चाहें कि मैं यहां आकर ईसाई-धर्म के सम्बन्ध में किसी के साथ कोई बात नहीं करूंगा, तो मैं वैसी प्रतिज्ञा करने को भी तैयार हूं। मैं आपको वचन देता हूं कि यदि कभी कोई बालक मुझसे ईसाई-धर्म के सम्बन्ध में कुछ पूछेगा, तो भी मैं ईसाई-धर्म के सम्बन्ध में चुप रहूंगा। मैं भारत की भाषा और भारत के धार्मिक जीवन का अध्ययन करने के लिये ही गुरुकुल आना चाहता हूँ।'' महात्मा जी ने लिखा– ''आप जब चाहें आ सकते हैं। यहां आते हुए एक ही प्रतिज्ञा करनी होगी। वह यह कि यहां रहते हुए मांसाहार नहीं करना होगा। ईसाई-धर्म के प्रचार के सम्बन्ध में आप यहां आकर देखेंगे कि उदारता का दावा करने वालों की अपेक्षा हम लोग कहीं अधिक उदार हैं।'' मि. मिलबर्न गुरुकुल आये। महिनाभर वहां रहे। हिन्दी सीख गये और साथ में भारत के धार्मिक जीवन का इतना प्रभाव ले गये कि कलकत्ता जाकर 'पादरीपन' को तिलांजलि दे दी।

इसी प्रकार मद्रास के संस्कृत के माने हुए विद्वान् श्रीयुत् कृष्णाचार्य सरस्वती-सम्मेलन के सभापति होकर इस शर्त पर आये कि उनका अपना रसाइया साथ में आयेगा और वे सब से अलग बन्द कमरे में अपना भोजन किया करेंगे। चार-पांच दिन वैसा कम चला। पर जाने के एक दिन पहिले महाविद्यालय भण्डार में उन्होंने ब्रह्मचारियों और महात्मा जी के साथ एक पंक्ति में बैठ कर भोजन किया। महात्मा जी के व्यक्तित्व और गुरुकुल के वातावरण में कुछ ऐसा ही प्रभाव था कि जो वहां आया, कुछ न कुछ उसके रंग में रंग कर ही गया। जिस संस्था में शाम को मेहतर तक रामायण का पाठ करते हों, ऊंची श्रेणियों के ब्रह्मचारी धोबियों तथा मेहतरों के बालकों को भी सुशिक्षित करना अपना कर्तव्य समझते हों, और जिस संस्था द्वारा चारों ओर दूर-दूर तक गांव-गांव में प्रारंभिक विद्यालय खोल कर शिक्षा का प्रचार किया जाता हो, उसके वातावरण में ऐसा जादू का-सा असर होना कोई बड़ी बात नहीं है।

ऐसी सफल संस्था की विशेषताओं पर भी थोड़ा प्रकाश इस लिये डालना आवश्यक है कि उसकी सफलता का रहस्य पाठकों को मालूम हो जाय और चरित्रनायक के जीवन के सर्वोत्तम और महान् कार्य के साथ उनका पूरा परिचय हो जाय। इन विशेषताओं की व्याख्या यहां इसलिये नहीं की जायेगी कि पिछले पृष्ठों में यत्र-तत्र उनका उल्लेख किये बिना भी उनकी व्याख्या हो गई है।

सन् 1920 में महात्मा गांधी द्वारा असहयोग-आंदोलन शुरू किये जाने पर जिस स्वतंत्र शिक्षा प्रणाली के लिये देश पागल हो उठा था, गुरुकुल उसका जीवित चित्र है। गुरुकुल अपने जन्मकाल से स्वतंत्र रूप में अपना काम करता आ रहा है। न उसको सरकार की किसी प्रकार की कोई सहायता प्राप्त है और न किसी सरकारी विश्वविद्यालय के साथ उसका किसी प्रकार का कुछ सम्बन्ध है। यही गुरुकुल की सबसे बड़ी और पहली विशेषता है। प्राचीन ब्रह्मचर्याश्रम-पद्धति तथा गुरु-शिष्य-सम्बन्ध को पुनर्जीवित करना दूसरी विशेषता है। जिस श्रद्धा, विश्वास, स्वाभिमान, नैतिकता और आस्तिकभाव की दूसरी संस्थाओं द्वारा समाप्ति हो रही है, उसको फिर से प्रस्थापित करना तीसरी विशेषता है। भारतीय सभ्यता के मूलमंत्र सादा जीवन तथा उच्च विचार को जीवन का एक हिस्सा बनाते हुए नष्टप्राय भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार करना चौथी विशेषता है। मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी द्वारा उच्च से उच्च शिक्षा देना गुरुकुल की अपनी ही विशेषता पांचवीं है। पश्चिम के विद्वान के साथ भारत के वैदिक संस्कृत विज्ञान का मिश्रण करना और वैदिक साहित्य का पुनरुद्धार करना छठी विशेषता है। समाज सुधार को जीवन के साथ तन्मय करते हुए रूढ़ि तथा परम्परा की जड़ काटना सातवीं विशेषता है। बाल-विवाह और जात-पात सरीखी हिन्दू-समाज में घर की हुई कुरीतियों का गुरुकुल ने पूरी सफलता के साथ मुंह काला किया है। उच्च से उच्च जाति के बालकों के साथ नीच से नीच समझी जाने वाली जाति के बालक बिना किसी भेदभाव के एक साथ रहते और शिक्षा प्राप्त करते हैं। समान भोजन, समान वस्त्र और समान व्यवहार गुरुकुल की आठवीं विशेषता है। धनी-निर्धन के भेदभाव को भी गुरुकुल ने मिटा दिया है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आर्य समाज द्वारा संचालित होने पर भी गुरुकुल साम्प्रदायिक-संसीा नहीं है, अपितु ऐसी आदर्श राष्ट्रीय-संस्था है जो किसी भी राष्ट्रीय संस्था के लिये नमूना हो सकती है। गुरुकुल के दस वर्षों का सिंहावलोकन करते हुए 'प्रचारक' में महात्मा जी ने लिखा था– ''मेरा यह विश्वास है कि सब मतवादियों के झगड़ों से दूर पले हुए थे गुरुकुल-निवासी आर्य जनता के पुत्र ही सनातनी, आर्य, मुसलमान और ईसाइयों के पारस्परिक झगड़ों को मिटा कर शांति की स्थापना करेंगे। यदि इस पर भी किसी के मन का संतोष न हो, तो उसे प्रतीक्षा करनी चाहिये।'' इसी उदार दृष्टि से महात्मा जी गुरुकुल का संचालन करते थे। इसीलिये गुरुकुल साम्प्रदायिक संस्था न होकर राष्ट्रीय-संस्था बन गया है। महात्मा गांधी ने गुरुकुल के सम्बन्ध में यह बिल्कुल ठीक कहा है कि– ''आर्य समाज के कार्य का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल की स्थापना है। यह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है, जिसका शासन और प्रबन्ध सब स्वायत्त है।''

आखिर हम किस बात पर गर्व करते हैं?

समकालीन भारत की बहुत सारी विशेषताओं में से कुछ मुझे बहुत आश्चर्य चकित करती हैं। इनमें से पहली विशेषता है अतीत के प्रति हमारा मोह। यह बहुत सामान्य बात है। अतीत के प्रति मोह वे ही तो पाल सकते हैं जिनका कोई अतीत होता है। हमारी सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है और इस पर हम गर्व करें, यह बहुत स्वाभाविक है। इस गर्व के लिए हमें क्षमा प्रार्थी होने की जरूरत नहीं है। लेकिन इधर के कुछ बरसों में यह बात भी देखने को मिल रही है कि हमारा यह गौरव भाव प्रयत्नपूर्वक बढ़ाया जा रहा है। नए बने समर्थ और सशक्त जन हमें तरह-तरह से यह समझा रहे हैं कि हमारा अतीत बहुत पहले से हमारी जेब में थी। काव्य को इतिहास का पर्याय बना कर उसकी अतिश्योक्तियों को, जो कि काव्य का स्वभाव होता है, यथार्थ के रूप में हमें परोसा जा रहा है। यह सब बहुत सुनियोजित तरीके से हो रहा है, और जो इसे कर रहे हैं, वे किसी नासमझी या भावुकता के कारण नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति के तहत ऐसा कर रहे हैं। हमें समझाया जा रहा है कि प्राचीन भारत में वो सब था जो आज हम चाहते हैं। हम समृद्ध थे, हम विकसित थे, हम आत्म निर्भर थे, हम प्रजातांत्रिक थे, हम शक्तिशाली थे, हम तकनीक के लिहाज से बहुत उन्नत थे, वगैरह-वगैरह। हमारे पास वायुयान भी थे और प्लास्टिक सर्जरी भी थी। हमारे पास टेलीविजन भी था और इण्टरनेट भी था। आप तो बस नाम लीजिए, वे तैयार बैठे हैं यह कहने को कि अरे, यह सब तो हमारे पुरखों के पास था लेकिन वे कहते ही कहते हैं। कोई प्रमाण उनके पास नहीं है। वे चाहते हैं कि उनके कहे को, और ज्यादा से ज्यादा से ज्यादा काव्य और मिथकों को ही आप प्रमाण मान लें। अगर आप उनके कहे पर सवाल उठायें तो आपके लिए न जाने कितनी अपमानजनक अभिव्यक्तियां उनके पास तैयार हैं। झेलते रहें। यानि आपकी सलामती इसी में है कि जो वे कहें उसे जस का तस स्वीकार कर लें।

मेरा यह मानना है कि जिस सोची-समझी रणनीति के तहत ऐसा किया जा रहा है वह यह है कि आपका ध्यान वर्तमान की दुरव्यवस्था की तरफ और इसको बेहतर बनाने में उनकी असफलता की तरफ न जाए। अगर चला भी जाए तो उनके अटपटे कथनों पर खड़े हुए विवादों में उलझकर वह भटक जाए। आप उनके कथनों पर बहसियाते रहें। जब आप उनके प्रमाण विहीन और ऊलजुलूल कथनों पर बहस करेंगे तो जाहिर है कि असर मुद्दों को आप भूल जायेंगे। यही तो वे चाहते हैं। इसके अलावा, अतीत में सब कुछ था यह कहकर वे बहुत चालाकी से उसके लोप का सारा ठीकरा बाद वालों पर फोड़ने की चालाकी भी बरतते हैं। महान या तो अतीत था या फिर वर्तमान है, बीच का बाकी सब तो गड़बड़ ही था, यह बात बहुत कुशलता से आपके गले उतारने की रणनीति को समझना बहुत जरूरी है।

अब इससे फिसलकर दूसरी बात परआता हूं। इसका सम्बन्ध किसी और से नहीं स्वयं से यानि हम सबसे है। मैंने यह नोट किया है कि हम सब सुभाषितों में विचरण करने वाले प्राणी हैं। और सुभाषितों की हमारे यहां कमी नहीं है। हमारा पूरा संस्कृत वांड्मय सुभाषितों से भरा पड़ा है। उन्हीं के बलबूते पर हमारे शिक्षण संस्थान, हमारे अन्य संस्थान, हमारा देश और हम सब चल रहे हैं। सत्यवमेव जयते से लगाकर तमसो मा ज्योतिर्गमय और वहां से सा विद्या या विमुक्तये और फिर वहां से यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता: तग और बीच में न जाने क्या-क्या! जरूरत पड़ने पर सुभाषित हम विदेश से आयात भी कर लेते हैं जैसे ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी। अगर उनसे भी काम नहीं चलता है तो खुद अपने सुभाषित भी गढ़ लेते हैं, जैसे बेटी ही दहेज है, या मेरे योग्य सेवा! लेकिन इन सुभाषितों की महत्ता और उपादेयता मात्र इतनी है कि इन्हें फ्रेम में जड़वा कर दीवार पर लटका दिया जाए। जीवन में इन्हें उतारने की कोई जरूरत नहीं है। वो गलती हम करते भी नहीं हैं। अब इस नारी वाले सुभाषित को ही ले लीजिए। बहुत गर्व करते हैं ना हम इस पर! लेकिन क्या आज के हालता जरा भी गवाही देते हैं कि हम इसमें विश्वास करते हैं?

कुछ महीनों से लेकर अस्सी-नब्बे बरस तक की वृद्धा तो इस देश में सुरक्षित है नहीं और हम हैं कि यत्र नार्यस्तु पूज्यंते का जाप करते रहते हैं। यही हाल सत्यमेव जयते का है! कहां हो रही है सच्चाई की जीत? हर तरफ तो झूठ का बोलबाला है। झूठ बोलकर बड़े-बड़े चुनाव जीत लिये जाते हैं। झूठ बोलकर और गीता या संविधान की शपथ लेकर हर तरह की झूठी बातें कर दी जाती हैं, अपने झूठ को ढकने के लिए कभी राष्ट्रहित का तो कभी गोपनीयता का सहारा ले लिया जाता है! क्या हक है हमें सच्चाई की दुहाई देने का? यही यथार्थ तमाम अन्य सुभाषितों का है। लेकिन सब कुछ जानते-समझते हुए भी हम यही दिखावा करते रहते हैं कि हमारा तो उन पर विश्वास है और हम शब्दश: उनका पालन करते हैं! यह सब करते हुए जाने किसे धोखा देते हैं हम?

लेकिन इन बातों से बढ़कर जो बात मुझे चकित, आहत और क्षुब्ध करती है, वह यह है कि अपने सारे गौरवशाली अतीत और इतनी महान परम्पराओं के बावजूद बतौर नागरिक हम सामान्य शिष्टाचार से भी दूर हैं। सामान्य शिष्टाचार कहता है कि हम जो कुछ भी करें, यह सदा स्मरण रखें कि हमारी वजह से किसी और को कोई असुविधा न हो। लेकिन अगर आप इस कसौटी पर आज के औसत भारतीय के बरताव को परखें तो बहुत निराश होंगे। बेशक अपवाद भी हैं, लेकिन वे अत्यल्प हैं। आप घर में देख लें, सड़क पर देख लें, अस्पताल में देख लें, दफ्तर में देख लें, सिनेमाघर में देख लें, हवाई जहाज में देख लें, हर जगह एक ही बात पायेंगे कि इस दुनिया में सिर्फ हम हैं, कोई और नहीं है जिसे हमारे किसी कृत्य से कोई असुविधा हो। आपका कोई परिचित कभी भी, बिना खबर दिये आपके घर आ सकता है, और न केवल आ सकता है, अनिश्चित काल के लिए आपका मेहमान बन सकता है। उसे इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ने वाला कि आपकी भी कोई व्यस्तताऐं या विवशताऐं हो सकती हैं। खुद मेरे साथ बहुत बार ऐसा हुआ है कि मुझे निश्चित समय तक कोई काम पूरा करके देना था और मेरे मेहरबान दोस्त गपशप के मूड में आ बैठे। अगर वे पहले से मेरी सुविधा-असुविधा जान कर आते तो यह बदमजगी नहीं होती। सड़क पर दौड़ते वाहनों को देखें तो आप पलक झपकते समझ जायेंगे कि इन्हें केवल और केवल अपनी सुविधा से मतलब है औरों की सुविधा और सुरक्षा जाए भाड़ में। और वाहन ही क्यों, जिन्हें सड़क पर खड़े होकर गपशप करने का आनंद लेना होता है वे भी भला औरों की परवाह कहां करते हैं? अगर आप शहर की गलियों और अन्य सड़कों को देखें और यह देखें कि लोगों ने किस तरह अतिक्रमण कर उन पर नाजायज कब्जे किये हैं तो आप का मन बहुत व्यथित होगा। लोगों ने अपने घरों के बाहर ऊंचे-ऊंचे रैम्प बना लिये हैं, बीस फिट की सड़क सिकुड़ कर दस फिट ही रह गई है, दुकानदारों ने अपना आधा सामान सड़कों पर सजा रखा है, फुटपाथों पर छोटे व्यवसाइयों ने कब्जे कर रखे हैं - यानि सही मानों में एक आजाद मुल्क का मंजर हमें हर कहीं देखने को मिलता है! अगर आप सिनेमा देखने जायें तो पूरी फिल्म के दौरान कभी आपकी बांयी तरफ वाला युवक तो कभी दांयी तरफ वाली बहन जी अपना मोबाइल स्क्रीन की चमक से आपका ध्यान भटकाने की कामयाब-नाकामयाब कोशिश करते मिलेंगे। पीछे बैठे सज्जन (?) बड़ी तसल्ली से अपने दोस्त से दस मिनिट खासी बुलंद आवाज में बतियाने में कोई सकोच नहीं करेंगे, और अगर आप उन्हें टोकने की गुस्ताखी कर दें तो वे आपको ऐसे घूरेंगे जैसे आपने कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो! आप डिस्टर्ब हो रहे हों तो हों, उनकी बला से। उन्होंने दो सौ रुपये खर्च ही इसलिए किये हैं ताकि वे आप जैसे सिनेमा प्रेमियों की नाक में दम कर सकें। स्कूटर पर जाता बंदा बहुत बिंदास अंदाज में दांये या बांये झुक कर पूरी ताकत से पान या गुटखे की पीक की पिचकारी छोड़ सकता है, बिना इस बात की जरा भी परवाह किये कि उसके ऐसा करने से पीछे वाले के कपड़े खराब हो सकते हैं। हर जगह यही मंजर देखने को मिलता है। हममें से किसी को भी इस बात की तनिक भी परवाह नहीं होती कि हमारी वजह से औरों को क्या कितनी असुविधा हो रही है। क्या यही होता है एक सभ्य नागरिक का बर्ताव?

मैं तो समझ नहीं पाता हूं कि आखिर हम गर्व किस बात पर करते हैं?

- डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद् और साहित्यकार)

प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य नेता प्रो. श्योताज सिंह जी की स्मृति में आयोजित की गई श्रद्धांजलि सभा

विश्वास नहीं होता कि प्रोफेसर श्योताज सिंह नहीं रहे

-सत्यव्रत सामवेदी

बेजुबान मजदूरों की आवाज के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे प्रो. श्योताज सिंह-स्वामी अग्निवेश

सादा जीवन उच्च विचार के स्वर्णिम आदर्श को अपनाते हुए प्रो. श्योताज सिंह जी ने स्थापित किये कई कीर्तिमान-स्वामी आर्यवेश

सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने अर्पित किये श्रद्धा सुमन

जयपुर। स्वामी अग्निवेश जी का फोन आया कि प्रो. श्योताज सिंह नहीं रहे। स्वामी जी ने ये भी कहा यह आदर्श मृत्यु थी और अस्पताल में गए बिना किसी बीमारी के वे चले गए। वे मेरे परम मित्र थे और उनके निधन का समाचार सुन कर मैं स्तब्ध रह गया। वे तो बिल्कुल स्वस्थ थे और उनकी दिनचर्या से ऐसा प्रतीत होता था कि वे शतायु होंगे। उनके निधन पर मुझे कामायनी की निम्नलिखित पंक्तियां याद आई-

जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन माला में
सौदामिनी संधि सा सुंदर क्षण भर रहा उजाला में

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में वे सर्वदा उद्वित रहते थे। अधर्म का जीवन उन्हें बर्दाश्त नहीं था। इसीलिए किसी व्यक्ति का वे अधार्मिक जीवन देखकर क्रुद्ध हो जाते थे। वे सदा सत्य ही कहते थे चाहे वह किसी को प्रिय लगे या अप्रिय। उन्होंने कभी भी सत्य के साथ समझौता नहीं किया। इसीलिए असत्यवादी उनके विरोधी हो गए थे। स्वामी अग्निवेश द्वारा स्थापित अग्निलोक के वे संचालक थे। ये अग्निलोक पहाड़ियों की सुगम्य छाया के नीचे अत्यन्त आकर्षक स्थान है। वे प्रोफेसर थे परंतु स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रज्वलित यज्ञाग्नि में उन्होंने अपनी आहुति दे दी। हमने आर्य समाज का निर्भिक वक्ता खो दिया। वे अग्निलोक आश्रम से प्रतिदिन प्रात: स्वामी अग्निवेश के पास जंतर-मंतर कार्यालय में चले जाते थे। वे मुझे अक्सर स्वामी अग्निवेश जी के कार्यालय में ही मिलते थे। अब मैं सोचता हूँ जब स्वामी अग्निवेश के कार्यालय में जाऊंगा और वे मुझे दिखाई नहीं देंगे तो मुझे कितना दुख होगा। असत्यवादी पर वे भड़क जाते थे परंतु स्वामी अग्निवेश जी के मंतव्यों को सुनकर वे बहुत दुखी होते थे परंतु वे केवल उनका ही प्रतिवाद नहीं करते थे और चुपचाप बाहर जाकर बैठ जाते थे।

दयानंद के ऐसे निर्भिक वक्ता और शत प्रतिशत धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने वाले प्रो. श्योताज सिंह को हमारी सादर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि।

आर्य समाज के नेता व गरीब, मजदूर व दलितों के रहनुमा प्रो. श्योताज सिंह की स्मृति में दिनांक 7 मई, 2018 को संकल्प सभा का आयोजन उनके पैतृक गांव जैनाबाद में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी स्वामी अग्निवेश जी ने की। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि हम सबको अपने बुजुर्गों का जीवित श्राद्ध करना चाहिए। उनके द्वारा किये गये कार्यों का गुणगान उनके जीते जी करेंगे तो उनके जीवन में उत्साह आएगा।

उन्होंने श्योताज सिंह जी को याद करते हुये कहा कि उनका पूरा जीवन जोखिम भरा रहा। वो बेजुबान मजदूरों की आवाज के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे। स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि प्रो. श्योताज सिंह जी ने हमारे साथ अपने जीवन के सुनहरे 40 वर्ष कंधे से कंधा मिलाकर विशिष्ट सहयोगी की तरह बिताये हैं। मैंने अनुभव किया कि वे हृदय के बड़े साफ तथा सहृदय व्यक्ति थे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्य में बड़े-बड़े खतरे उठाकर उन्होंने परतंत्रता तथा अभावों का दंश झेल रहे हजारों बच्चों को मुक्त कराया और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी दिनचर्या अत्यन्त नियमित थी और वे सफेद वस्त्रों में रहकर संन्यासी जैसा जीवन व्यतीत करते थे। प्रोफेसर साहब की महर्षि दयानंद और आर्य समाज में गहरी आस्था थी और आर्य समाज के कार्य के लिए वे सर्वात्मना समर्पित थे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से उन्होंने जो कार्य किये वो कार्य कोई सामान्य व्यक्ति नहीं

स्व. प्रो. श्योताज सिंह

कर सकता। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन असहाय, निर्बल तथा अन्याय सहने वाले बच्चों को समर्पित कर दिया था। वे कुशल संगठक तथा आंदोलन का नेतृत्व करने में विशेष महारथ रखते थे। हमारे साथ मिलकर उन्होंने विभिन्न आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज ने एक संघर्षशील नेता खो दिया जिसकी भरपाई आसान नही है। स्वामी जी ने प्रो. श्योताज सिंह जी के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि प्रो. साहब मेरे अत्यन्त आत्मीय थे और उन्होंने समय-समय पर अपने प्रबुद्ध तथा दूरदर्शी विचारों से अनेकों कठिन परिस्थितियों में हमारा सहयोग किया था। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दबे-कुचले लोगों के जीवन को उन्नत करने में लगा दिया। वे अत्यन्त उत्साही एवं कर्मठता से ओत-प्रोत व्यक्तित्व के धनी थे। अनेकों आंदोलनों को अपने कुशल संयोजन के बल पर उन्होंने सफलता तक पहुँचाया था। प्रोफेसर साहब अत्यन्त संकल्पशील व्यक्ति थे जो ठान लेते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। सादा जीवन उच्च विचार को जीवन में धारण करते हुए उन्होंने अप्रतिम कार्यों को करके अपना जीवन अनुकरणीय बना लिया था। आज हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके संकल्पों को पूरा करना है। स्वामी जी ने बताया कि 12 मई 2018 (शनिवार) को प्रो. साहब की संकल्प सभा नई दिल्ली में आर्य समाज के विश्व मुख्यालय, सार्वदेशिक सभा कार्यालय 3/5 आसफ अली रोड़, नई दिल्ली-2 में आयोजित होगी।

वरिष्ठ संन्यासी स्वामी सुधानंद योगी ने कहा कि श्योताज सिंह आजीवन अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहे। अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहे। अन्याय के विरुद्ध लड़ाई जारी रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि हम सब आज प्रो. साहब के जीवन से अच्छे कर्म करने का संकल्प लें तथा उनके विचारों को जन जन तक पहुंचाया कर समाज में फैली बुराइयों को मिटाने में एक विशेष भूमिका निभानी चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि उनका पूरा जीवन अपने आप में प्रेरणादायी रहा। आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान को प्रारंभ करने में प्रो. साहब का बहुत बड़ा योगदान रहा है। केंद्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने एक ऐसे नेता को खो दिया है जिसने हमेशा अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलंद की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व प्रधान ओम प्रकाश एडवोकेट ने कहा कि उनके कार्य ही उनको हमेशा जीवित रखेंगे।

डी एफ एस सी रामवतार यादव ने कहा कि वो सफेद कपड़ो में संन्यासी थे। सादगी के सागर थे। गुलामगिरी के विरुद्ध लड़ने वाले योद्धा थे। अलीगढ़ (उ.प्र) गुरुकुल के संचालक स्वामी श्रद्धानंद ने कहा कि मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है, लेकिन जिसके जाने से समाज को क्षति हो, ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से बहुत बड़ी क्षति है। बिहार से आर्य मौलाना साहिन कासमी ने कहा कि प्रो. साहब ने मजहब की दीवारों को तोड़कर गरीब व मजलूमों के हक अधिकारों की लड़ाई लड़ी।

इस अवसर पर स्वामी शरणानंद जी, प्रो. अनिरुद्ध यादव, डॉ. अतुल यादव, कुरुक्षेत्र, श्री राजेन्द्र सिंह बिसला पूर्व विधायक, श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, श्री जगदीश आर्य, श्री ऋषिपाल आर्य फरीदाबाद, श्री मनोज सिंह, श्री विष्णुपाल, श्री रमेश आर्य, श्री सोनू, श्री अशोक वशिष्ठ आदि दिल्ली श्री रामनिवास आर्य नारनौल, श्री रामनिवास गांधी कोसली, साध्वी पुष्पा शास्त्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान के प्रधान राजेश, हवा सिंह हुड्डा, प्रसिद्ध इतिहासकार के.सी. यादव, हरिद्वार से आचार्य अखिलेश, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान व दीक्षेन्द्र आर्य, रमेश पायलेट, महामंत्री, हरियाणा यादव सभा, आचार्य योगेंद्र, मा. पोहप सिंह, धर्मबीर आर्य, बहरोड़, मधुर प्रकाशन के मालक मधुर प्रकाश, राष्ट्रीय शिक्षक संघ के प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप कुमार, महेंद्र भाई, जसवंत आर्य, ब्र. यशदेव, धर्मेन्द्र आर्य, छपरौली, उ.प्र.ब्र. गजराज सिंह, रामनिवास गांधी, रामपाल यादव, महेंद्र सरपंच डहीना, विद्यासागर आर्य सहित सैकड़ों व्यक्तियों ने पहुंचकर प्रो. श्योताज सिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। श्री सुरेन्द्र यादव ने सभी का आभार किया तथा मंच संचालन वेदपाल शास्त्री ने किया।

प्राण-प्रतिष्ठा वाली मूर्ति

शास्त्रों का, ज्ञानी पंडित जनो का तथा पूजारियों का कथन है कि हमें प्राण-प्रतिष्ठा वाली मूर्ति को ही पूजना चाहिए। जब भी नई मूर्ति की स्थापना की जाती है तो बड़े ज्ञानी पंडित जी को बुलाया जाता है तथा विशेष अनुष्ठान द्वारा मन्त्रोच्चार करके मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा कर, उस मूर्ति को पूजा योग्य बना दिया जाता है। हमेशा के लिए पूजा का कार्यक्रम शुरू हो जाता है। किन्तु मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा हुई है या नहीं हुई है? इसका उत्तर देना हमें कठिन प्रतीत होता है। केवल विश्वास ही करना होता है।

वास्तव में प्राणों का संचार तो प्रत्येक व्यक्ति के स्वयं के शरीर में ही होता है तथा उसे अनुभूति भी होती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति का शरीर ही प्राण-प्रतिष्ठा वाली मूर्ति होना चाहिए। इसके लिए निम्न क्रियायें करनी चाहिए:-

''यह हमारा शरीर मय इसकी चेतना शक्ति के आप भगवान को ही अर्पण हैं। आपकी आज्ञा से हमें भी इसमें आश्रय प्राप्त है। इस शरीर में हमारा अपना कुछ भी नहीं है, सब कुछ आप भगवान का ही है।'' साधना के प्रारम्भ में ही हमें भगवान से ऐसी प्रार्थना कर अहंकार शून्य हो जाना चाहिए। भगवान के प्रति अहंकार छोड़ने पर, जिस शरीर को हमने धारण कर रखा है, वह हमारा नहीं हो कर भगवान का हो जाता है। इस शरीर का स्वामित्व भी भगवान का हो जाता है। इस प्रकार अपना स्वयं का शरीर ही भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा वाली मूर्ति बन जाता है।

उपासना या पूजा के समय जब हम अपनी आँखें बन्द करेंगे और ध्यान लगायेगे तो ध्यान मं परमात्मा की ही अनुभूति होगी। जो भी दृष्टि-गोचर (अन्दर) होगा, वह भगवान से सम्बन्धित ही होगा, क्योंकि हमने अपने स्वयं के शरीर को मय इसकी चेतना शक्ति के भगवान को ही अर्पण कर दिया है।

निम्न क्रियाओं द्वारा स्तुति उपासना, प्रार्थना और पूजा के समय स्वयं के शरीर में प्राणों का अनुभव अवश्य करते रहना चाहिए तथा साधना को विधिवत् चालू रखते रहना चाहिए।

1. **मेरूदण्ड, पद्मासन:-** मेरूदण्ड सीधा रखकर साधना में बैठना है, पद्मासन लगे तो ज्यादा अच्छा है। मेरूदण्ड छाती की ओर उठा रहना चाहिए। इसको सीधा नहीं रखेंगे तो प्राणों का, बल का अनुभव नहीं होगा।

2. बाह्य कुम्भक प्राणायाम कर के प्राणों का, बल का अनुभव करें।

3. दोनों हाथों को भगवान के लिए अभिवादन मुद्रा में जोड़कर छाती को दबाते हुए प्राणों का, बल का अनुभव करें।

4. पश्चिमोत्तान आसन से भी प्राणों का, बल का अनुभव करे।

5. **पीड़ा का अनुभव:-** देर तक साधना में बैठने पर पीड़ा का अनुभव होता है, तो उसमें भी भगवान का अनुभव करे। प्राणों का, बल का अनुभव करे।

6. ओ३म् की उच्च ध्वनि कर, उसके कम्पन्न का अनुभव करे प्राणों का, बल का अनुभव करे।

7. किसी भी योग के आसन द्वारा भी प्राणों का, बल का अनुभव कर सकते है।

क्रियाओं द्वारा जब भी प्राणों का, बल का, चेतना का अनुभव करे, उसी समय में प्रार्थना, उपासना तथा पूजा का कार्यक्रम चालू रखे। भगवान का स्मरण करते रहे।

प्राण। बल। चेतना = शरीर में भगवान के द्वारा ही प्राप्त है। ये सब भगवान की पहचान के आवश्यक तत्व भी हैं। अत: भगवान को जानने के लिये इनका अनुभव करना अत्यन्त आवश्यक है। 'जो उतरोगे अन्दर, छूट जायगा मंदिर।'

आप यदि चाहे तो, प्राणों के, बल के तथा चेतना के अनुभव के समय गायत्री मन्त्र और प्राणायाम मन्त्र का उपयोग कर सकते है। वे निम्न प्रकार है:-

-: प्राणायाम मन्त्र:-

ओं भू:। ओ भुव:। ओं स्व:। ओं मह:।
ओं जन:। ओं तप:। ओं सत्यम्।

कविता में अर्थ :-

नमो ओम आनंद शान्ति प्रदाता।
नमो हे भू: प्राणों के प्राण दाता।
नमो हे भुव: कष्ट हर लेने हारे।
नमो हे स्व: सुखी भक्त आश्रय तुम्हारे।
नमो हे मह: ब्रह्म आदित्य रूपम।
नमो हे जन: सृष्टि कर्त्ता अनुपम।
नमो हे तप: दु:ख नाशक पिता हो।
नमो सत्य सर्वज्ञ: सब के सखा हो।
सभी हम प्रभो! अब शरण आपकी है।
हुई दूर बाधा जो भव ताप की है।

गायन्त्री मन्त्र :-

ओ३म् भूर्भुव: स्व:। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्।

कविता में अर्थ :-

ओ३म् हो रक्षक हमारे, सब गुणो की खान हो।
भू: सदा सब प्राणियों के भी प्राण के भी प्राण हो।
भुव: सब दु:खों को करते, दूर कृपा निधान हो।
स्व: सदा सुख रूप, सुखमय, सुखद, सुखधि महान हो।
तत् वही सुप्रसिद्ध भगवान, वेद वर्णित सार हो।
देव सवितुर सर्व उत्पादक हो पालन हार हो।
शुभ वरेण्यं वरण करने योग्य भगवान आप हो।
शुद्ध भर्ग: मल रहित, निर्लेप हो निष्पाप हो।
दिव्य गुण देवस्य देव स्वरूप् देव अनूप के।
धीमहि धारे हृदय में दिव्य गुण सब आपके।
धियो यो न: वह हमारी बुद्धियों का हित करे।
'अमर, प्रचोदयात् नित् सन्मार्ग में प्रेरित करे।

टिप्पणी:-

उपासना के समय में:-

'मैं अपना अहंकार छोड़कर अपना शरीर मय इसकी चेतना शक्ति के भगवान को अपर्ण कर देता हूँ। सो यह शरीर जो मैने धारण कर रखा है भगवान के रूप में मेरे समक्ष उपस्थित हो जाता है। भगवान सशरीर हो जाते हैं तथा मैं निराकर ही रहता हूँ। भगवान को जो मुझे कहना होता है, मैं आँखें बंद कर, जो मेरे सामने उपस्थित होता है, उसे मैं मेरे हृदय की बात कह देता हूँ अर्थात् भगवान को।'

- रामनारायण लोहिया
17, शिव शक्ति नगर, किंग्स रोड़,
अजमेर रोड़, जयपुर

लोकतंत्र और भीड़तंत्र के बीच

कुमार प्रशांत, लेखक और कार्यकर्ता

तो कर्नाटक में वह हो रहा है जो किसी ने नहीं चाहा था - न कर्नाटक के मतदाता ने, न भाजपा और कांग्रेस ने। यह भी नहीं होपाया जो मोदी-शाह की 'अजेय' जोड़ी ने दिल्ली में बैठ कर चाहा था। न वही हो पाया जिसकी कोशिश में राज्यपाल वजूभाई वाला ने अपना पूरा कॅरियर दांव पर लगा दिया। और न केजी बोपय्या ही एक दिन के लिए विधानसभा अध्यक्ष (प्रोटेम) बन कर जो करने की सोच रहे थे, वही कर सके।

अगर किसी ने कुछ चाहा और वही हुआ तो वह सर्वोच्च न्यायालय है। 16-17 मई की आधी रात को भारतीय न्यायालय सजग पहरेदार की तरह जागा हुआ था। उसने किसी पर कोई टिप्पणी किए बिना सबको कठघरे में खड़ा कर दिया - राज्यपाल द्वारा दी गई पंद्रह दिन की मोहलत काट कर, 24 घंटे की बना दी, लेकिन राज्यपाल को शपथ दिलाने और येड्डियूरप्पा को शपथ लेने से नहीं रोका। उसमें केजी बोपय्यया को प्रोटेम अध्यक्ष बनाने पर आपत्ति नहीं की लेकिन उनके पर इस तरह कतर दिए कि वे न उड़ सकते थे, न उड़ा सकते थे। उसने कांग्रेस की कोई दलील कबूल नहीं की, पर न्याय की अपनी टेक कहीं से भी कमजोर नहीं पड़ने दी। और अब आप देखिए कि देश में किसी को इसकी नहीं पड़ी है कि नया मुख्यमंत्री कौन बनता है। आज कर्नाटक में सत्ता संदर्भहीन हो गई है।

सारे देश की नजर जिस चुनाव पर लगी थी, और देश के सारे राजनीतिक दलों ने जिसे जीतने में अपनी पूरी ताकत झोंक रखी थी, उस चुनाव के नतीजों के प्रति ऐसी उदासीनता? लोग यह नहीं पूछरहे हैं कि कर्नाटक में कौन जीता, पूछ यह रहे हैं और हतप्रभ से देख भी यही रहे हैं कि कौन, कितने गर्त में गिरता है और लोकतंत्र को गिराता है।

वे सारी संवैधानिक संस्थाएं व व्यवसीाएं एक-एक कर जर्मीदोज की जा रही हैं, जिनकी रचना इसलिए की गई थी कि जब कभी, जब कहीं राजनीतिक चालबाजियां और सत्ता की अजगरी भूख लोकतंत्र का भक्षण करने लगे तो उसे रोकने व थामने वाली ताकतें संविधान के भीतर से निकल कर आप ही सामने आ जाएं। कर्नाटक में ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि राजनीतिक नेतृत्व का पतन सारी संवैधानिक व्यवस्थाओं को दीमक की तरह चाट गया है। कर्नाटक में जो हुआ वह लोकतंत्र का खेल था। जो जश्न मना रहे थे, उन्हें लकवा मार गया। जो लकवाग्रस्त थे, वे दौड़ने लगे। अब पतन की दौड़ दो तरपु शुरू हुई - राजभवन की तरफ और फिसलने वाले विधायकों की तरफ। लोकतंत्र ने अपना खेल कर दिया। फिर शुरू हुआ लोकतंत्र से खिलवाड़। राजनीति में जोड़-तोड़ की एक जगह होती ही है, लेकिन सारी राजनीति मात्र जोड़-तोड़ नहीं है।

फिसलने वाले विधायकों का हाल यह था कि कांग्रेस व जद (से) उनकी पहचान करने में नहीं, खरीददारों से उन्हें बचाने-छिपाने में जुट गए। किसी को इस पतन का दर्द नहीं था कि दस करोड़ हो या सौ करोड़, जो बिकने को तैयार है उसे देश में रखो या विदेश में वह बिका ही रहेगा। राजनीति वह फिसलपट्टी है जो सिर्फ नीचे की तरफ ही जाती है। लोकतंत्र में नैतिकता न हो (संविधान न हो) तो वह चोरों-बदमाशों की मिलीभगत से अलग कुछ भी नहीं होता। महात्मा गांधी ने 'हिंद-स्वराज' में लिखा था कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति देशभक्त होता है, यह कहते मेरी जीभ ऐंठती है। उनका सीधा मतलब ऐसी नीतिविहीन राजनीति के शीर्षपुरुष से था। वे जान गए थे कि जो बाजार से खरीद कर लाया गया है, उस लोकतंत्र का शीर्ष पुरुष सौदा करने में सबसे घाघ व्यक्ति ही हो सकता है। कहें कि राजनीति का शाइलॉक। भाजपा ने कर्नाटक में भी लोकतंत्र से वही खिलवाड़ शुरू किया जो उसने गोवा, मणिपुर, मेघालय आदि में किया था। मोदी-शाह अब तक इस मुगालते में रहे हैं कि वे जो चाहेंगे कर लेंगे और वही लोकतंत्र कहलाएगा। लेकिन जैसी कि कहावत है, आप काठ की हांडी को दो बार चूल्हे पर नहीं चढ़ा सकते। न्यायपालिका ने अपने आदेश में सीधा संकेत दे दिया है कि 10 सप्ताह के बाद, मतलब कर्नाटक में लोकतंत्र से खिलवाड़ की धूल जब बैठ जाएगी और सारे जश्न पूरे हो चुके होंगे, तब वह इस पूरे मामले की व्यापक पड़ताल करेगी और अपनी व्यवस्था सुनाएगी। यह वह तलवार है जिसे ले कर लोकतंत्र कर्नाटक से लौटा है। अब यह तलवार न्यायपालिका के ऊपर भी तनी रहेगी। कर्नाटक में जो किया गया, अगर वह संविधानसम्मत था तो फिर गोवा, मणिपुर आदि के जवाब न्यायालय कैसे देगा? हत्या कई माह या साल पहले हुई थी, इसलिए अपराध प्रमाणित होने व अपराधी सामने होने पर भी सजा कैसे द जा सकती है, न्यायपालिका ऐसा तो नहीं कह सकेगी। तब वह क्या कहेगी? बस, इतना ही है कि खतरे की एक घंटी नजदीक आती सुनाई दे रही है। लोकतंत्र और भीड़तंत्र के बीच संविधान नाम का जो अम्पायर खड़ा होता है, यदि वह अनुपस्थित हुआ तो सड़क संसद की जगह ले लेती है। यह भी लोकतंत्र का ही खेल है, लेकिन बेहद खतरनाक।

संदर्भ... चुनावी वादों और प्रचार के साथ जनता को दिखाए जाने वाले सपने और राजनीतिक दलों के अपार शाही खर्च।

खुश रहें! न अच्छे दिन आए, न अच्छे दिन आएंगे

पुण्य प्रसून वाजपेयी का विश्लेषण

'साफ नीयत सही विकास' के साथ ईमानदारी और कामकाजी सरकार का जिक्र। 'न खाऊंगा न खाने दूंगा' महज जुमले के साथ कांग्रेस का हमला। 'हम में है दम अब आपके भरोसे नहीं' के नारे के साथ नीतीश समेत एनडीए सहयोगियों का दम-खम। 'सब साथ तो फिर सत्ता हमारे हाथ' के साथ विपक्ष का नारा। तेवर हर किसी के, पर मुद्दे गायब। तो क्या ये मान लिया जाए कि धर्म के आसरे ध्रुवीकरण की राजनीति की उम्र पूरी हो चुकी है।

हिन्दुत्व की चाशनी में सोशल इंजीनियरिंग का खेल खत्म हो चला है। मुद्दों की फेहरिस्त कोई गिना दे पर पूरी कोई नहीं करता, ये सच मोदीकाल की देन है। ईमानदारी का राग या घोटालों के दाग की परिभाषा बदल चुकी है। यानी पहली बार देश प्रिंट मीडिया और टीवी मीडिया से होते हुए डिजिटल मीडिया या कहें सोशल मीडिया के आसरे हर मुद्दे पर इतनी बहस कर चुका है कि छुपाने के लिए किसी दल के पास कुछ नहीं और बताने के लिए किसी नेता के पास कुछ नया नहीं है। फिर भी 2019 आएगा। चुनाव होंगे। लोकतंत्र का राग गाया जाएगा और वह मुद्दे जिन्हें कभी नेहरू के सोशलिज्म तले देश ने देखा-समझा। लालबहादुर शास्त्री के 'जय जवान जय किसान' के नारे को सुना। इंदिरा के जरिए दुनिया की ताकत बनने का हौसला पाया। राजीव गांधी के जरिए तकनीक की समझ विकसित की। पीवी के जरिए बाजारवाद को परखा। वाजपेयी के जरिए गठबंधन की अनूठी सियासत समझी। मनमोहन सिंह के जरिए आवारा पूंजी को भोगा और नरेन्द्र मोदी के जरिए वादों की लंबी-चौड़ी फेहरिस्त देखी।

पर हालात बदले क्यों नहीं? हर दौर में सत्ता ने देश की गरीबी दिखाई, पर खुद की रईसी में किसी सत्ता ने कोताही नहीं बरती। और मौजूदा दौर तो रिकॉर्ड तोड़ने वाला है जहां प्रचार से लेकर दुनिया भ्रमण कुछ इस अंदाज में जारी है जैसे सब फ्री हो। दरअसल किसी ने भी उस भारत की जरूरतों को उसी की ताकत से स्वावलंबी बनाने के बारे में सोचा ही नहीं, जो समूची दुनिया में बेची जाती है। मसलन भारत है तो सस्ते मजदूर मिल जाएंगे। गांव में बसता भारत किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए मुफ्त में जमीन से लेकर खनिज संपदा देने को तैयार है। तीनों का दोहन किया गया। तीनों को वोट बैंक से जोड़कर हर सियासत ने लूटपाट की। विज्ञापनों के जरिए धोखा नहीं दिया जा सकता ये सीख है, पर बेअसर है। हर राज्य ने जो नहीं किया, उसे प्रचारित किया। 27 राज्यों के विज्ञापन देश के हर राज्य में छपते रहे। अखबारों से लेकर टीवी तक दिखाई देते रहे। यानी भ्रष्ट राजनीति की लकीर मनमोहन सरकार के दौर में इतनी मोटी थी कि नेताओं से घृणा होने लगी, तो अन्ना आंदोलन के सामने झटपट संसद तक को नतमस्तक होने में देर नहीं लगी। और मोदीकाल ने किसी भी करप्शन के खिलाफ कोई कार्रवाई न कर ये जतला-बतला दिया कि सब सियासत है। ये सत्ता पाने का खेल है, तो फिर जनता क्या करे। क्योंकि जनता के पैसे पर ही सत्ता की मौज है। आलम है क्या जरा समझ लें। मसलन आंकड़ों के लिहाज से समझें तो देश में कुल 4582 विधायकों पर साल में औसतन 7 अरब 50 करोड़ रुपए खर्च होते हैं। इसी तरह कुल 790 सांसदों पर सालाना 2 अरब 55 करोड़ 96 लाख रुपए खर्च होते हैं। अब तो राज्यपाल भी राजनीतिक पार्टी से निकल कर ही बनते हैं तो तमाम राज्यपाल-उपराज्यपालों पर एक अरब 8 करोड़ रुपए सालाना खर्च होते हैं।

खर्चों के इस समंदर में पीएम और तमाम राज्यों के सीएम का खर्चा जोड़ा नहीं गया है। फिर भी इन हालातों के बीच अगर हम आप से ये कहें कि नेताओं को और सुविधा चाहिए यानी बंगले की सुविधा। देशभर में सभी नेताओं के बंगले और नेताओं की पाटिज़्यों के ट्रस्ट की सरकारी जमीन अगर जोड़ दी जाए तो फिर आपको जानकर और हैरत होगी कि साढ़े तीन लाख एकड़ में फैली दिल्ली भी नेताओं के मकान के घेरे में छोटी पड़ जाएगी। पर हालत यहीं नहीं थमती। सवाल तो ये है कि कमोबेश हर राज्य में नेताओं की पौ बारह रहती है। सत्ता किसी की रहे, रईसी किसी की कम होती नहीं। नेताओं ने मिलकर आपस में ही यह सहमति भी बना ली कि नेता जीते, चाहे हारे उसे जनता का पैसा मिलते रहना चाहिए। जी, अगर आपने किसी सांसद या विधायक को हरा दिया, तो उसकी सुविधा में कमी जरूर आती है पर बंद नहीं होती। मसलन सांसद हार जाए तो भी हर सांसद को 20 हजार रुपए महीने की पेंशन मिलती है। 10 एयर टिकट तो सेकंड क्लास में एक साथी के साथ यात्रा फ्री में। टेलीफोन बिल भी मिल जाता है। हारे हुए विधायकों के बारे में राज्य सरकारें ज्यादा सोचती हैं तो और हर पूर्व विधायक को 25 हजार रुपए की पेंशन जिंदगी भर मिलती रहती है। सालाना एक लाख रुपए का यात्रा कूपन भी मिलता है। सफर हवाई हो या रेल या फिर तेल भराकर टैक्सी सफर, महीने का 8 हजार तीन सौ रुपए। और अगर कोई पूर्व सांसद पहले विधायक रहा तो उसे दोनों की पेंशन यानी हर महीने 45 हजार रुपए मिलते रहेंगे।

यानी जनता जिसे हरा देती है, उसके ऊपर देश में हर बरस करीब 200 करोड़ रुपए से ज्यादा जनता का पैसा लुटाया जाता है। जो सत्ता में रहते हैं, उनकी तो पूछिये मत। दिन में होली, रात दीवाली हमेशा रहती है। ऐसे में आखिरी सवाल, 2019 में वह कौन सा मुद्दा होगा जिसके आसरे देश में सत्ता बदल जाएगी। या फिर वह कौन सी उम्मीद होगी जिसके जरिए आमजन सोचेगा कि 2019 जल्दी आ जाए तो उसके अच्छे दिन आ जाएंगे। आखिरी सच तो यही है कि एक दिन में पेट्रोलियम पदार्थों पर एक्साइज ड्यूटी भर से केंद्र सरकार के खजाने में 665 करोड़ रुपए आ जाते हैं। राज्य सरकारों को वैट से 456 करोड़ की कमाई होती है। पेट्रोलियम कंपनियों को एक दिन में पेट्रोल-डीजल बेचने से 120 करोड़ रुपए का शुद्ध मुनाफा होता है।

प्रधानमंत्री के एक दिन के विदेश दौरे पर 21 लाख रुपए खर्च होते हैं तो केंद्र सरकार का विज्ञापनों पर एक दिन का खर्च करीब 4 करोड़ रुपए है। सिर्फ एक दिन में मुख्यमंत्रियों के दफ्तर में चाय-पानी पर 25 लाख रुपए खर्च होते हैं। प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम एक संदेश में 8 करोड़ 30 लाख रुपए खर्च हो जाते हैं। तो भी इंतजार करें 2019 का।

आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर की श्रद्धेय माता जी का अवसान, संघर्ष की लोमहर्षक गाथा

हमारा समाज महापुरूषों की गाथाओं से भरा पड़ा है, लेकिन किसी महिला के संघर्षों और उससे पार पाने की उसकी अपनी हिम्मत और जिजीविषा की दास्तां कम ही सुनने को मिलती है, बीते एक मई को भगवान ने एक ऐसी ही महिला को अपने पास बुला लिया, जो इस पुरूष प्रधान समाज में महिला सशक्तिकरण की मिसाल थीं। क्या हम कम हिम्मत की बात है कि किसी लड़की की 16 साल की उम्र में शादी हो और शादी के 14 साल बाद अकस्मात पति की मौत हो जाय? उसके बाद अकेले अपने दम पर बच्चों का पालन-पोषण करना और उन्हें कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाना क्या एक महिला के लिए आसान रहा होगा? इन सभी सवालों का जवाब है माताजी स्वर्गीय संतोष चड्ढा की संघर्षरत जिंदगी के वो किस्से जो उन्होंने खुद ही एक बार साझा किया था।

'सुनने में भले ही यह फिल्मी लगे, लेकिन यह मेरी सच्ची कहानी है, सोलहवें साल में शादी हुई और तीसवें साल में विधवा हो गई। यह कहानी का अंत नहीं, मेरी दास्तां की शुरूआत है। एक साल में तीन मौतें और दर्जन भर मजबूरियां, फिर भी आज मुझे खुद पर नाज है कि रईसी से गरीबी आना अखरता तो था, लेकिन मैंने तय कर लिया था कि मैं किसी की मदद नहीं लूंगी। मई 1961 में दिल का दौरा पड़ने के कारण पति की मौत हो गई। उनके बाद मेरे 6 बेटों की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई। मेरा दूसरा बेटा मिर्गी से जूझ रहा था, चंद महीने बाद मैंने उसे भी खो दिया। घर में हुई इन मौतों के बाद हौसले जवाब देने लगे थे, ऐसे में रईस भाइयों का ख्याल आया, लेकिन मैंने यह सोचकर अपने कदम रोक लिए कि आज ली हुई मदद मेरे बेटों के लिए ताउम्र का सवाल बन जाएगी। इसलिए मैंने हिम्मत की और अपने घर के बाहर लगे आम का आचार बनाना शुरू किया। मुरब्बे, सॉस आदि बनाना मैंने सीखा हुआ था और इन्हीं को अपनी जीविका का आधार बनाया। पांचवीं पास औरत का इतने संघर्षों के साथ अपने दम पर जीना लोगों को अखरने लगा। लोगों की नजर मेरे मकान पर भी पड़ी लेकिन मैंने तय कर लिया था कि न ही मकान बेचना है और न ही किसी से मदद लेनी है। मेरे बेटों जैसी औलाद मिलना भी मेरा नसीब ही था। मैंने एक सफेद साड़ी में अपने चारों बेटों की शादी करवा दी और मेरे बेटों ने एक कमीज में सालों गुजार दिए।

आज माताजी संतोष चड्ढा हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन संघर्षों से जूझते हुए उनपर विजय पाने की उनकी यह कहानी हमेशा प्रेरणादायक बनी रहेगी, 1922 में जम्मू में जन्मी संतोष चड्ढ़ा की शादी 1939 में राजस्थान के पिलानी के चुन्नीलाल चड्ढा से हुई। वे अपने पति और पांचों पुत्रों सुरेंद्र, आनंद, वीरेंद्र, प्रवीण और प्रदीप के साथ 1952 तक पिलानी में ही रहीं उसके बाद 1958 तक उनका परिवार उदयपुर में रहा, फिर वे जयपुर के आदर्श नगर में आ बसे। पति की मौत के बाद माताजी ने अपने उद्यम से बच्चों को अच्छी शिक्षा दी, उनका अच्छे से परवरिश किया और उन्हें अच्छी नौकरियों के काबिल बनाया। पोतों की अच्छी शिक्षा में भी उनका भरपूर योगदान रहा। जीवन में उनके परिवार पर अनेकों संकट आए, लेकिन कोई भी विपदा उनके दृढ संकल्प के आगे टीक नहीं सकी। मृत्यु पर्यंत वे अपने 40 सदस्यीय परिवार के लिए स्तंभ बनकर खड़ी रहीं। अपनी जिंदगी के 90 वर्ष पूरे कर लेने के बाद भी उनके मन में परिवार और समाज को लेकर हमेशा कोई न कोई भाव चलता रहता था। यह भी इत्तेफाक ही कहा जाएगा कि आजीवन संघर्ष और मेहनत की प्रतिमूर्ति रहीं माताजी संतोष चड्ढ़ा ने एक मई यानि मजदूर दिवस के दिन ही दुनिया को अलविदा कहा। माताजी संतोष चड्ढा के संर्घषपूर्ण जीवन को दिल से सलाम.....।

संदर्भ... विपक्षी दलों के सामने आम चुनाव में भी उदारता दिखाने व स्थानीय मुद्दे उठाने का संदेश फैलाने की चुनौती।

उपचुनाव के बाद भूल सुधार की राह पर भाजपा

-: राजदीप सरदेसाई :-

उपचुनाव स्कूल के मासिक टेस्ट जैसे होते हैं। इसके अंकों का अंतिम परीक्षा में कोई महत्व नहीं होता। इसीलिए उपचुनाव के एक और दौर में भाजपा से बेहतर प्रदर्शन करने पर विपक्ष का जश्न जल्दबाजी हो सकती है लेकिन, भारत की प्रमुख पार्टी भी 2019 के आम चुनाव में जीत मानकर नहीं चल सकती।

यह सिर्फ ज्यादा एकजुट विपक्ष की चुनौती का मामला नहीं है। सच यह है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कैराना से महाराष्ट्र के भंडारा-गोंदिया तक भाजपा के वोट शेयर में गिरावट है, जो बढ़ते सत्ता विरोध का शुरुआती संकेत है। चुनावी धक्का उत्तर और पश्चिम में लगा है, यह भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी 'उत्तर-पश्चिम' की लहर ने भाजपा को 2014 की शानदार जीत दी थी। भाजपा यह दावा नहीं कर सकती है कि नरेन्द्र मोदी ने इन उपचुनावों में प्रचार नहीं किया। कैराना में मतदान के एक दिन पहले प्रधानमंत्री पड़ोस के बागपत जिले में नए एक्सप्रेस-वे को हरी झंडी दिखाते हुए क्षेत्र के लिए 'अच्छे दिन' का वादा कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तो क्षेत्र में रैलियों पर रैलियां कर रहे थे। यहां तक कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से जिन्ना की तस्वीर हटाने का सांप्रदायिक मुद्दा तक उठाया गया था। जैसा कि हुआ, मई 2018 बिल्कुल मई 2014 जैसा नहीं था। तब मुजफ्फरनगर के भयावह दंगों की पृष्ठभूमि में भाजपा असाधारण ध्रुवीकरण करने में कामयाब रही। इस बार गन्ने के अधिक यथार्थवादी मुद्दे ने -जैसा कि गन्ने का बकाया देने की किसानों की मांग से जाहिर होता है- बांटने वाले जिन्ना पॉलिटिक्स को मात दे दी। क्या हम 2019 के आम चुनाव के पहले ताजे राजनीतिक विमर्श की वापसी होते देख रहे हैं, जिसमें स्थानीय चिंताएं टीवी स्टूडियो में उठाए जाने वाले 'राष्ट्रीय' मुद्दों को मात दे देती हैं? जवाब हां भी है और नहीं भी।

चुनाव के वक्त स्थानीय मुद्दों का महत्व तो होता है। कैराना में पूरे भाजपा विरोधी विपक्ष ने राष्ट्रीय लोक दल के प्रत्याशी का समर्थन किया। इससे उन्हें विपक्षी एकता की मजबूती के फायदे का आंकड़ों में संकेत मिला और वे आत्मविश्वास के साथ 'गन्ना' कार्ड खेल सके। किंतु 'स्थानीय मुद्दे को उठाने' के संदेश को 29 राज्यों की 543 सीटों तक पहुंचाना बहुत बड़ी चुनौती है। राजनीतिक दलों की स्पर्धा की प्रवृत्ति के कारण वे चाहे उपचुनाव में जगह छोड़ने को राजी हों पर संसदीय चुनावों की अंतिम परीक्षा में उनके इतना उदार होने की संभावना नहीं है। उदाहरण के लिए क्या बसपा उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के दौरान उस तरह सीटों पर दावा छोड़ेगी, जितनी उदारता उसने उपचुनाव में दिखाई है या ममता बनर्जी बंगाल में कांग्रेस से कैसे तालमेल करेगी, जबकि अपने घरेलू मैदान में वे कांग्रेस के खिलाफ युद्ध छेड़ रही होंगी?

भाजपा भी पूरे दृढ़ निश्चय के साथ 2019 के चुनाव को राष्ट्रपति प्रणाली वाली चुनावी स्पर्धा में बदलने पर तुली होगी। वह लोगों के सामने 'मोदी बनाम कौन' का मुद्दा रखेगी। यदि विपक्ष नेतृत्व की यह चुनौती स्वीकार करने के जाल में फंस गया तो विजेता एक ही हो सकता है। चुनाव-दर-चुनाव मोदी ने अपनी अथक ऊर्जा और व्यक्तित्व के करिश्मे से भाजपा को अंतिम चरण में ऊंचा उठाने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। आम चुनाव में भाजपा-आरएसएस की चुनावी मशीन का आकार इतना बड़ा और संसाधन इतने व्यापक हैं कि उन्हें बीच में बैठे मतदाताओं को अपने पक्ष में झुकाने का आत्मविश्वास पैदा हो जाता है। मोदी और उनके सहयोगी अमित शाह ने विपक्ष को उनकी जोड़ी के अजेय होने का यकीन दिलाकर अपनी कद्दावर छवि गढ़ ली है। क्रिकेट की दुनिया से रूपक लें तो स्टीव वॉ की ऑस्ट्रेलियाई टीम और क्लाइव लाइव की वेस्टइंडीज टीम ने ज्यादातर मैच टॉस उछाले जाने के पहले ही इसलिए जीत लिए, क्योंकि विरोधी टीम उन्हें हराने की सोच भी नहीं सकती थी। किंतु जैसा कि 1983 में वेस्ट इंडीज के खिलाफ भारत की आश्चर्यजनक विश्वकप विजय और 2001 में कोलकाता में चमत्कारिक वापसी ने दिखाया कि अपराजेय दिखाई देने वाले प्रतिद्वंद्वी को भी मात दी जा सकती है, बशर्ते पर्याप्त आत्मविश्वास हो।

पिछले चार साल में लगभग हर चरण पर मात खाने वाले विपक्ष के बाद अब राजनीतिक चुनौती की रूपरेखा तो उभर रही है। इसके केंद्र में है आखिरी राजनीतिक हथियार : नेता की अस्तित्व बचाने की वृत्ति। इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि क्यों कांग्रेस ने कर्नाटक में सरकार बनाते समय एचडी कुमारस्वामी के सामने एक तरह से समर्पण कर दिया या मायावती भूतकाल की शत्रुता भुलाने के लिए क्यों राजी हो गईं? जैसा कि महात्मा गांधी ने संघर्ष-समाधान का विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था, 'समझौते की सुंदरता'। अब वह विपक्ष का मंत्र हो गया है यानी हठधर्मिता छोड़कर मुख्य प्रतिद्वंद्वी को पराजित करने के एकमात्र उद्देश्य से सुलह की इच्छा।

ऐसा नहीं है कि प्रभावी दल जमीन पर लेट जाएगा और विपक्ष को खुद को कुचलकर आगे जाने देगा। संकेत मिलने लगे हैं कि मोदी-शाह जोड़ी सुधार के रास्ते पर चल पड़ी है। गन्ना उद्योग को विशाल सहायता पैकेज शायद देर से हुए अहसास का नतीजा है कि कैराना के बाद 'गन्ना' किसानों को राहत की जरूरत है। आम चुनाव के पहले ऐसी और रियायतों की उम्मीद है, क्योंकि मोदी सरकार पेट्रोल टैक्स से समृद्ध कोष को आम आदमी के साथ बांटने की तैयारी कर रही है। शाह सहयोगियों को मना रहे हैं और कपिल देव से लेकर पूर्व सेनाध्यक्ष तक विभिन्न सेलिब्रिटी के साथ फोटो खिंचा रहे हैं, जो भविष्य का एक और संकेत है कि 2019 के चुनाव के पहले भाजपा को मित्रों का दिल जीतने और लोगों को प्रभावित करने की कला फिर सीखनी होगी। 'एकला चालो रे' दिल छू लेने वाला गीत है पर जरूरी नहीं कि यह अच्छी राजनीति भी हो।

पुनश्च : कैराना नतीजे के एक दिन बाद मेरे दोस्त में मुझे भाजपा समर्थकों का एक वॉट्सऐप फॉरवर्ड भेजा। इसमें लिखा था- 'देखो कैराना में क्या हुआ। 35 फीसदी मुस्लिमों ने एकजुट होकर वोट डाले, जबकि हम हिंदू विभाजित हैं और पेट्रोल की कीमतों पर झगड़ रहे हैं!' चुनाव के पहले आने वाले महीनों में अपेक्षा कीजिए कि यह सांप्रदायिक स्वर और तीखा होगा।

लूट ही लूट

दो मोबाइल संदेशों ने हमारी नींद हराम कर रखी है। पहला संदेश विदेश से आ रहा है कि हमारे मोबाइल नंबर पर पंद्रह लाख डॉलर का इनाम खुला है और वह धनराशि हमें तुरंत देना चाहते हैं इसलिए हमसे कुछ सूचनाएं मांग रहे हैं जो हमें तुरंत भेजनी है। और दूसरा संदेश बैंक से आ रहा है जो हमें आगाह कर रहे हैं कि हम अपने बैंक खाते की सूचना कभी भी फोन पर ना दें। अब बताइए हम क्या करें। अभी सोच में पड़े ही थे कि दो दिन पहले एक समाचार पढ़ा कि एक भले आदमी के खाते से ठगों ने चौदह लाख रुपए निकाल लिए और उसे खबर तक नहीं लगी।

अभी सोच-विचार में पड़े ही थे कि केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी की चेतावनी कानों में पड़ा प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर कई बिल्डर ग्राहकों को गुमराह कर रहे हैं। कसम से यह खबर पढ़ते ही हम सकते में आ गए। अब यकीन करें तो किस पर। जब प्रधानमंत्री के नाम पर ही लोगों को लूटने की योजना चल रही है तो फिर किसके कांधे पर अपना सिर रखें। अपने प्रधानमंत्री ने दो बरस पहले छाती ठोक-ठोक कर कहा था कि पूरा इंडिया एक दिन कैशलेस हो जाएगा। और सचमुच इलेक्ट्रॉनिक लुटेरे बेचारे आम आदमी को कैशलेस करने पर तुले हैं। आपके मोबाइल से सारी सूचनाएं 'हैक' कर ली जाती हैं और आपको पता भी नहीं चलता औश्र आपका बैंक खाता खाली हो जाता है। जब देश की राजधानी और उसके इर्दगिर्द ही बिल्डर ग्राहकों को गुमराह कर रहे हैं तो दूरदराज क्षेत्रों में तो भगवान की मालिक होगा। लेकिन बेचारा भगवान भी क्या करे।

हमारी सरकार और व्यवस्था ने तो आदमी को राम भरोसे ही छोड़ रखा है। अब भगवान पीने के पानी का इंतजाम करे, लोगों को बीमारी से बचाए या उनके बैंक खातों में सेंध लगाने से रोके। मंत्रीजी आपने ठीक फरमाया। हम एक बार बहकावे में आ गए, आपकी कसम अब की बार बहकावे में नहीं आएंगे। लेकिन शातिर ठग तो आंख का काजल तक चुरा लेते हैं फिर आप लोग क्या भांग खाकर सो रहे हैं।

हरिद्वार चलो! चलो हरिद्वार!! हरिद्वार चलो!!!

देश–विदेश के समस्त आर्यजनों से अपील

भारी संख्या में गुरुकुलों के इस महाकुम्भ में पहुँचें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम्।

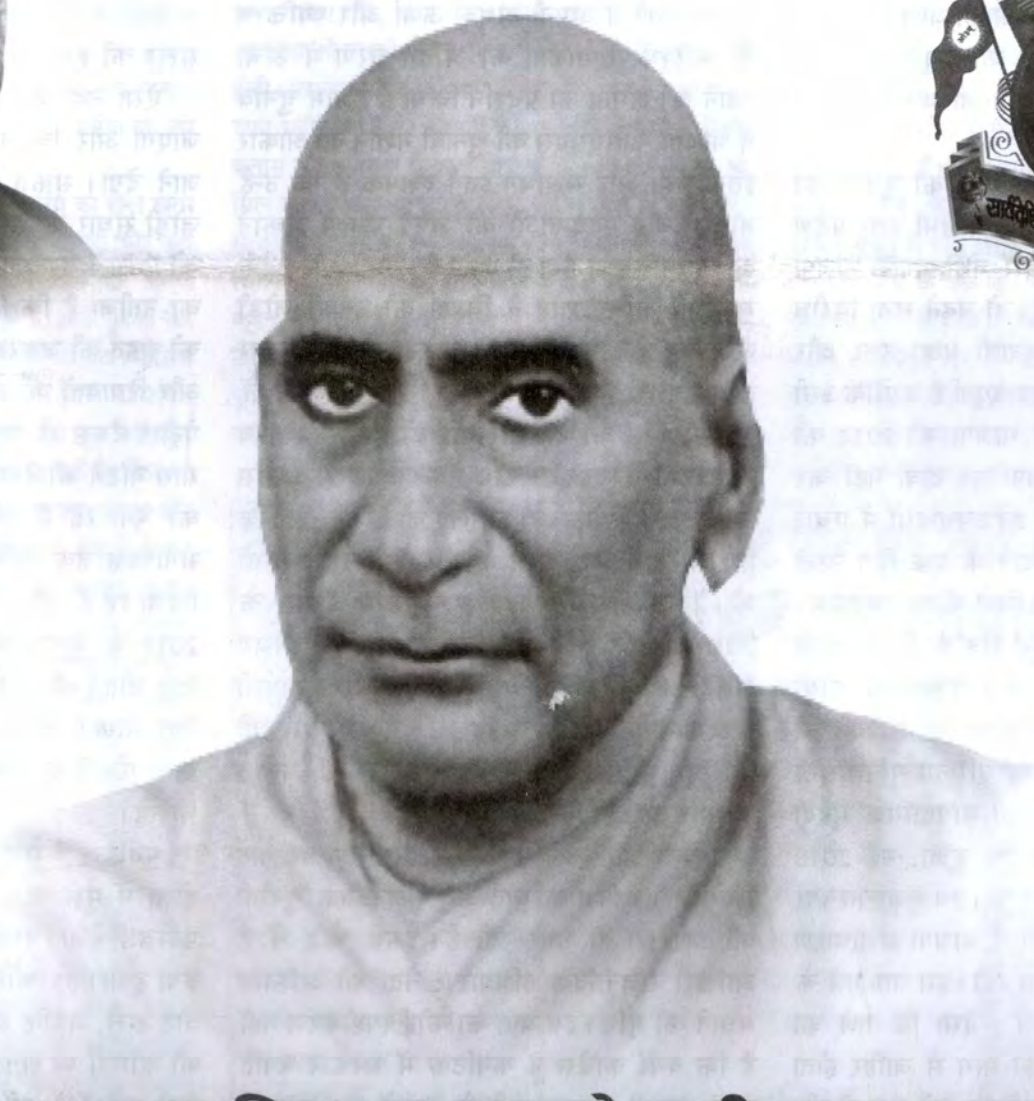

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार 6, 7, 8 जुलाई, 2018

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शांति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M : 9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com
आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित
–:: डाक वापसी का पता ::–
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर–4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, पार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक
टिकि.

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
JaipurCity/250/2015-17

प्रेषित : ....